INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 11 | DECEMBER – 2025

भीष्म साहनी की मानवतावादी दृष्टि में मानवीय मूल्यों का अध्ययन

बुद्धि प्रकाश त्रिपाठी
शोधार्थी हिन्दी
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. एन.पी. प्रजापति
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय महाविद्यालय, बाणसागर, शहडोल (म.प्र.)

सारांश –

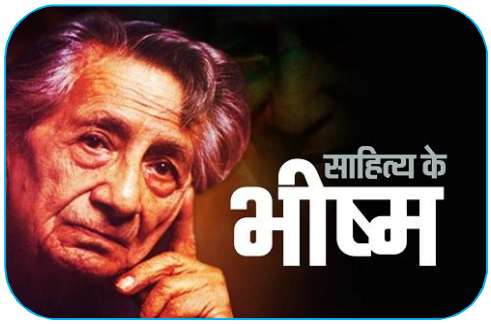

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के उन अग्रणी रचनाकारों में हैं, जिन्होंने अपने साहित्य का केंद्र मनुष्य और उसकी मानवता को बनाया। उनकी रचनाओं में प्रेम, करुणा, सहिष्णुता, समानता, न्याय और सह–अस्तित्व जैसे मानवीय मूल्य अत्यंत प्रभावशाली रूप से उभरते हैं। उपन्यास 'तमस' में उन्होंने साम्प्रदायिक हिंसा के अंधकार में भी मनुष्यता की लौ जलती हुई दिखाई। साधारण हिंदू–मुस्लिम पात्रों के आपसी सहयोग और दंगा–राजनीति की आलोचना में उनका वास्तविक मानवतावाद प्रकट होता है। बसंती और कुंतो में स्त्री के संघर्ष, गरिमा और संवेदना को प्रमुख स्थान मिला है, जहाँ मनुष्य के सम्मान और स्वतंत्रता का मूल्य उजागर होता है। झूठा सच जैसे उपन्यासों में उन्होंने विभाजन, राजनीतिक झूठ, सामाजिक असमानता और वर्ग–संघर्ष के बीच मनुष्य की सत्य और न्याय के प्रति आस्था को रेखांकित किया। भीष्म साहनी का मानवतावाद आदर्शवादी नहीं बल्कि जीवन–आधारित, यथार्थवादी और संवेदनशील है। वे मानते हैं कि समाज में परिवर्तन की असली शक्ति प्रेम, करुणा और सामूहिकता में निहित है। इसलिए उनका साहित्य केवल कथा नहीं, बल्कि समाज के लिए मानवीय मूल्यों का मार्गदर्शन भी है। भीष्म साहनी की मानवतावादी दृष्टि मनुष्य को केंद्र में रखकर जीवन की जटिलताओं को समझने का आग्रह करती है और यह बताती है कि हिंसा, विभाजन और अन्याय के अंधकार में भी मनुष्य की करुणा और सहानुभूति ही सभ्यता को आगे बढ़ाती हैं।

मुख्य शब्द – भीष्म साहनी, मानवता, प्रेम, करुणा, सहिष्णुता, समानता और न्याय।

प्रस्तावना –

हिंदी साहित्य में भीष्म साहनी एक ऐसे कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं जिनकी रचनाएँ मानवीय सहानुभूति, करुणा, समानता और सामाजिक न्याय की गहरी चेतना से ओतप्रोत हैं। उनकी कहानियों का केंद्रीय उद्देश्य मनुष्य को उसके संपूर्ण यथार्थ और संवेदना के साथ समझना है। भीष्म साहनी की दृष्टि मूलतः मानवतावादी है। एक ऐसी दृष्टि जो मनुष्य को जाति, वर्ग, धर्म, भूगोल अथवा किसी भी सामाजिक विभाजन से ऊपर उठकर देखती है। उनका साहित्य मनुष्य की पीड़ा, संघर्ष और आकांक्षाओं को मानव–मूल्यों के व्यापक

परिप्रेक्ष्य में परखता है और पाठक को उस मानवीय संवेदना की ओर उन्मुख करता है जो समाज में सौहार्द, न्याय और समानता के आधार का निर्माण करती है।

भीष्म साहनी की मानवतावादी दृष्टि किसी भावनात्मक उदात्तीकरण की परिणति नहीं, बल्कि उनके जीवनानुभवों, सामाजिक परिवेश और प्रगतिशील चिंतन की देन है। भारत–पाक विभाजन, साम्प्रदायिक तनाव, वर्गीय विषमता, शोषण और हाशिये पर खड़े लोगों का जीवन–इन सबका उनके व्यक्तित्व और रचना–जगत पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी कहानियों में मनुष्य की जिजीविषा, संघर्षशीलता और नैतिक साहस के साथ–साथ मनुष्य–मन की विडंबनाएँ, द्वंद्व और सीमाएँ भी ईमानदारी से अभिव्यक्त हुई हैं। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ केवल सामाजिक दस्तावेज नहीं बनतीं, बल्कि मानवीय मूल्यों के संवाहक रूप में प्रतिष्ठित होती हैं।

भीष्म साहनी के साहित्य की बुनियाद में यह विश्वास स्पष्ट दिखाई देता है कि प्रत्येक मनुष्य अपने भीतर एक साझा मानवीयता का अंश लेकर चलता है, वही मानवीयता उसे दूसरे के दुःख से जोड़ती है, अन्याय के विरुद्ध खड़ा करती है और स्वयं को समाज के प्रति उत्तरदायी बनाती है। उनकी कहानियों में मानव–मूल्यों का यह स्वर न तो उपदेशात्मक है, न ही आदर्शोन्मुख कल्पना, बल्कि यह वास्तविक जीवन की स्थितियों से उपजा एक जीवन–तथ्य है।

विश्लेषण –

भीष्म साहनी की मानवतावादी दृष्टि केवल साहित्यिक दृष्टिकोण नहीं, बल्कि एक सामाजिक–नैतिक प्रतिबद्धता है जो उनकी कथाओं को मानव–जीवन के सार्वभौमिक सत्य के निकट ले जाती है। उनकी कहानियों में मानवीय मूल्यों का यह निरंतर प्रवाह उन्हें न केवल हिंदी कहानी के उच्च शिखरों पर प्रतिष्ठित करता है, बल्कि समकालीन समाज के लिए एक महत्वपूर्ण वैचारिक द्योतक भी बनाता है।

हिंदी कथा–साहित्य के परिदृश्य में भीष्म साहनी उन विरल रचनाकारों में हैं जिनकी साहित्यिक चेतना का मूल आधार मनुष्य और उसकी गरिमा है। उनके कथा–लोक में मानव मात्र के अस्तित्व, संघर्ष, अधिकार, संवेदना तथा समानता का प्रश्न अत्यंत केंद्रीय रूप से उपस्थित होता है। भीष्म साहनी के कथा–लेखन में न तो आदर्शवादी आवरण है और न ही यथार्थ की क्रूरता का अतिरेक बल्कि दोनों के बीच मनुष्य को केंद्र में रखकर एक ऐसी दृष्टि निर्मित होती है जिसे मानवतावादी यथार्थवाद कहा जा सकता है। यही कारण है कि उनकी कहानियों का प्रमुख लक्ष्य मनुष्य को उसकी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों से उबारकर उसकी मूलभूत गरिमा को पुनर्स्थापित करना है। वे जीवन को उसकी संपूर्ण जटिलता और विवशताओं के साथ प्रस्तुत करते हुए पाठक को यह अनुभव कराते हैं कि आधुनिक सामाजिक संरचना में सबसे अधिक उपेक्षित तत्व "मनुष्य" ही है, और साहित्य का दायित्व इस उपेक्षा का प्रतिरोध करते हुए मानवीय मूल्यों की रक्षा करना है।

मानवीय मूल्य किसी भी समाज की नैतिक आधारशिला हैं, जो व्यक्ति को संवेदनशील, सहानुभूतिशील और उत्तरदायी बनाते हैं। भीष्म साहनी इन मूल्यों को जीवन से पृथक करके नहीं देखते बल्कि वे मानते हैं कि मनुष्य की वास्तविक पहचान उसकी सामाजिक भूमिकाओं से नहीं, बल्कि उसकी मानवीय चेतना से होती है। उनकी कहानी 'चीफ की दावत' में सामाजिक–प्रशासनिक सत्ता के सामने मनुष्य की व्यक्तिगत गरिमा का क्षरण जिस सूक्ष्मता से उभरता है, वह लेखक की मानवीय दृष्टि का सशक्त संकेत है। कहानी के पात्रों में मौजूद हाशियाकरण के अनुभव सत्ता–तंत्र की निष्ठुरता को दर्शाते हैं, परन्तु इन परिस्थितियों से उभरने वाली करुणा और संवेदना ही कहानी को मानवतावादी धरातल प्रदान करती है। लेखक स्वयं स्वीकार करते हैं कि "मनुष्य की गरिमा उसकी सबसे बड़ी पूँजी है"[1] और यही धारणा उनकी अधिकांश कहानियों के केंद्र में सक्रिय दिखाई देती है।

भीष्म साहनी के मानवीय मूल्यों का एक महत्त्वपूर्ण आयाम यह है कि वे किसी एक वर्ग, जाति या समुदाय के मनुष्य को प्राथमिकता नहीं देते, बल्कि उनके लिए प्रत्येक मनुष्य समान रूप से मूल्यवान है। उनकी कहानी 'पाली' इसका अत्यंत मार्मिक उदाहरण है, जिसमें विभाजन की त्रासदी के बीच एक बिछड़े हुए बालक के प्रति मानवीय लगाव धार्मिक सीमाओं को पार करते हुए दिखाई देता है। यहाँ लेखक यह स्थापित करते हैं कि मनुष्य का वास्तविक धर्म उसकी मानवता है, न कि वह धार्मिक पहचान जिसे समाज ने उसके ऊपर आरोपित कर दिया है। कहानी में पाली के प्रति पात्रों की करुणा दर्शाती है कि कठोर ऐतिहासिक परिस्थितियों में भी मानवीय मूल्य जीवित रह सकते हैं, यदि मनुष्य अपनी अंतःप्रेरणा से संचालित हो। यह कथा मानवतावादी

दृष्टि का ऐसा उदाहरण है, जहाँ लेखक इतिहास की त्रासदी को मानवीय संवेदना से काटकर देखने का प्रयास करते हैं।

भीष्म साहनी की मानवतावादी दृष्टि केवल करुणा तक सीमित नहीं है, वह मनुष्य के अधिकारों, न्याय और समानता की माँग के रूप में भी व्यक्त होती है। उनकी कहानी 'अमृतसर आ गया है' में साम्प्रदायिक उन्माद के बीच फँसे यात्रियों की मनोदशा तथा उनके बीच विकसित होती मानवीय एकजुटता लेखक की उस विचारधारा को प्रत्यक्ष करती है जो हिंसा और वैमनस्य के विरुद्ध मानवता को सर्वोपरि सिद्ध करती है। इस कहानी में लेखक बताते हैं कि कठिन समय में मनुष्य का पहला सहारा कोई सिद्धांत, धर्म या राजनीति नहीं, बल्कि दूसरा मनुष्य ही होता है। इसी कारण से भीष्म साहनी "साहित्य को मानव–केन्द्रित पक्षधरता का माध्यम" मानते हैं और यह मान्यता उनके समस्त रचनाकर्म की वैचारिक नींव बन जाती है।'[2]

भीष्म साहनी के मानवतावाद का एक विशेष गुण यह है कि वह भावुकतावाद में परिवर्तित नहीं होता। उनका मानवीय दृष्टिकोण यथार्थ की प्रक्रिया से गुजरता है। वे मनुष्य की पीड़ा को केवल दर्शाते नहीं, बल्कि उसके कारणों को पहचानकर उसे सामाजिक संरचना से जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए 'ओ भाभीजी' में स्त्री के प्रति समाज की परंपरागत दृष्टि और उसके वस्तुकरण को जिस सूक्ष्मता से लिखा गया है, वह मनुष्य की गरिमा पर एक गहरी टिप्पणी है। यहाँ लेखक यह दिखाते हैं कि किस प्रकार पितृसत्ता स्त्री के अस्तित्व को व्यवस्था का उपकरण बना देती है, और उसके खिलाफ स्त्री की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया ही उसकी मानवता का पुनर्जागरण है। इस तरह की कथाएँ मानवतावाद को सामाजिक विमर्श से जोड़ने का कार्य करती हैं और यह स्पष्ट करती हैं कि भीष्म साहनी का मानवतावाद किसी अमूर्त आदर्श का रूप नहीं, बल्कि जीवन–स्थितियों के भीतर संघर्षरत चेतना का स्वरूप है।

भीष्म साहनी की मानवतावादी दृष्टि का एक अन्य आयाम हाशिये पर स्थित वर्गों के जीवन का चित्रण है। भीष्म साहनी उन लोगों के जीवन के प्रति विशेष सहानुभूति रखते हैं, जो समाज की मुख्यधारा से विमुख या वंचित कर दिए गए हैं। मजदूर, निम्नवर्गीय लोग, बेरोजगार, प्रवासी, स्त्रियाँ और दलित समुदाय–इन सभी की उपस्थिति उनके कथानक में संरचनात्मक रूप से महत्वपूर्ण है। 'तसलीम' जैसी कहानियाँ सामाजिक–आर्थिक विषमता और श्रमजीवी वर्ग की उपेक्षा को यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत करती हैं, परंतु कथा का केंद्र करुणा और नैतिक संवेदनशीलता बना रहता है। भीष्म साहनी का यह विश्वास कि "मानवीय मूल्य समाज को मानवीय बनाते हैं, अन्यथा मनुष्य केवल व्यवस्था का पुर्जा बनकर रह जाता है,"'[3] उनके कथा–संसार को रचनात्मक रूप से दिशा प्रदान करता है।

भीष्म साहनी की मानवीय दृष्टि का सबसे प्रभावशाली रूप उनकी भाषा–शैली में दिखाई देता है। उनकी भाषा जितनी सरल है, उतनी ही आत्मीय और संवेदनशील भी। भाषा में मौजूद यह सहजता मनुष्य की पीड़ा को पाठक के सामने अनावृत्त कर देती है। वे घटनाओं का नाटकीय चित्रण नहीं करते, बल्कि पात्रों के भीतर चल रहे संघर्ष को इस तरह उभारते हैं कि पाठक स्वतः संवेदित होता है। यह शैली मानवीय मूल्यों के संप्रेषण का महत्वपूर्ण साधन बनती है। लेखक स्वयं लिखते हैं कि "साहित्य मनुष्य के मन में छिपे हुए करुण भावों को जाग्रत करता है और यही उसका सबसे बड़ा सामाजिक उद्देश्य है।"'[4]

आज के संदर्भ में भी भीष्म साहनी की मानवतावादी दृष्टि उतनी ही प्रासंगिक है जितनी अपने समय में थी। बदलते सामाजिक ढाँचे, उपभोक्तावाद, तकनीकीकरण, राजनीतिक हिंसा और सामुदायिक विभाजन के इस दौर में मनुष्य का अस्तित्व बार–बार संकटग्रस्त होता जा रहा है। ऐसे समय में भीष्म साहनी का साहित्य पाठक को यह याद दिलाता है कि किसी भी व्यवस्था से अधिक महत्वपूर्ण मनुष्य और उसकी गरिमा है। उनके साहित्य की यह विशिष्टता उन्हें हिंदी कहानीकारों की भीड़ में अत्यंत विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

भीष्म साहनी का मानवतावाद उनकी कहानियों की आत्मा है। यह मानवतावाद केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता, करुणा और संवेदना का समन्वित रूप है। उनकी कहानियाँ यह स्थापित करती हैं कि समाज तभी स्वस्थ और समृद्ध हो सकता है जब उसके भीतर मानवीय मूल्य जीवित रहें और मनुष्य को उसकी संपूर्ण गरिमा के साथ स्वीकार किया जाए। प्रस्तुत विवेचन से स्पष्ट है कि भीष्म साहनी की मानवतावादी दृष्टि न केवल उनकी साहित्यिक पहचान का आधार है, बल्कि हिंदी कथा–साहित्य को मानवीय संवेदनाओं का एक व्यापक आयाम भी प्रदान करती है।

इस प्रकार भीष्म साहनी की मानवतावादी दृष्टि हिंदी कथा–साहित्य में मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का एक सशक्त और संवेदनशील माध्यम है। उनकी कहानियाँ केवल सामाजिक यथार्थ का सूक्ष्म निरीक्षण नहीं करतीं, बल्कि मनुष्य की अंतर्निहित करुणा, सहानुभूति, नैतिकता और समानता–बोध को सक्रिय भी करती हैं। उनका साहित्य यह सिद्ध करता है कि मनुष्य के भीतर निहित मानवता ही समाज की सबसे बड़ी शक्ति है, वही शक्ति जो विभाजन, हिंसा, वर्गीय संघर्ष, साम्प्रदायिकता और सामाजिक अन्याय जैसे विघटनकारी तत्वों के विरुद्ध खड़ी हो सकती है। भीष्म साहनी की रचनाओं में मानव–मूल्य कोई उपदेशात्मक अवधारणा नहीं, बल्कि जीवन के वास्तविक अनुभवों से निर्मित एक व्यावहारिक सत्य है। वे पात्रों के माध्यम से यह दिखाते हैं कि मनुष्य अपनी परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए भी संवेदनशील और नैतिक रह सकता है, वह अपनी कमजोरियों और विडंबनाओं के बीच भी दूसरों के दुःख से जुड़ने का सामर्थ्य रखता है। यही संवेदना उनके कथा–संसार को विशिष्ट बनाती है। साहनी का मानवीय दृष्टिकोण विशेष रूप से उन वर्गों, समुदायों और व्यक्तियों की पीड़ा को केंद्र में रखता है जिन्हें समाज ने हाशिये पर धकेल दिया है–जैसे मजदूर, गरीब, स्त्रियाँ, शरणार्थी, बुजुर्ग और बच्चे। उनके पात्र केवल करुणा के पात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील चेतना से युक्त जीवंत मनुष्य हैं, जो प्रतिकूल स्थितियों में भी मानवता के मूल स्वभाव को बनाए रखते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि भीष्म साहनी का मानवतावाद किसी अमूर्त आदर्शवाद का परिणाम नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ की गहरी समझ और प्रगतिशील वैचारिक प्रतिबद्धता से निर्मित है। इसलिए उनकी कहानियाँ पाठक के भीतर न केवल संवेदना जगाती हैं, बल्कि सामाजिक नैतिकता और उत्तरदायित्व की चेतना भी उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार भीष्म साहनी की मानवतावादी दृष्टि आधुनिक हिंदी कहानी को एक ऐसी वैचारिक ऊँचाई प्रदान करती है जहाँ कहानी केवल कथन नहीं रह जाती, बल्कि मनुष्य और समाज के लिए एक मूल्यवान नैतिक संदेश बन जाती है। उनकी रचनाएँ यह संदेश देती हैं कि बदलते समय में भी मानवीय मूल्य ही वह स्थायी आधार हैं, जिन पर एक न्यायपूर्ण, सहृदय और समतामूलक समाज की स्थापना संभव है।

निष्कर्षः

निष्कर्षतः यह प्रतिपादित किया जा सकता है कि भीष्म साहनी का साहित्य मनुष्यता की गहन खोज है। उन्होंने अपने उपन्यासों, कहानियों और नाटकों में बार–बार यह सिद्ध किया कि मनुष्य का मूल स्वभाव प्रेम, करुणा, सह–अस्तित्व और संवेदना है। तमस हो या बसंती, कुंतो हो या झूठा सच–हर रचना में उन्होंने सामान्य मनुष्य के दुःख–सुख, संघर्ष, पीड़ा और मानवीय जिजीविषा को अत्यंत गहराई से अभिव्यक्त किया। उनकी मानवतावादी दृष्टि आदर्शवादी नहीं बल्कि यथार्थ के कठोर धरातल पर खड़ी है। वे साम्प्रदायिकता, हिंसा, सामाजिक असमानता, राजनीतिक स्वार्थ और स्त्री–शोषण जैसे प्रश्नों के बीच मनुष्यता के छोटे–से छोटे प्रकाश को भी महत्वपूर्ण मानते हैं। भीष्म साहनी का संदेश सरल है। मनुष्य ही मनुष्य का सहारा है। जब समाज घृणा और विभाजन की ओर बढ़ता है, तब प्रेम, करुणा, सहयोग और न्याय ही वह मूल्य हैं, जो सभ्यता को बचाए रखते हैं। इस प्रकार, भीष्म साहनी की रचनाएँ मानवता के संवेदनशील दस्तावेज हैं, जो हमें यह विश्वास दिलाती हैं कि कठिन समय में भी मनुष्यता की लौ बुझती नहीं–वह संघर्ष, विश्वास और संवेदना की शक्ति से और प्रखर होती है।

संदर्भ –

[1] साहनी, भीष्म – मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ 42
[2] साहनी, भीष्म – कथा–संसार और समाज, पृष्ठ 58
[3] साहनी, भीष्म – जीवन और साहित्य, पृष्ठ 112
[4] साहनी, भीष्म – लेखक का मन, पृष्ठ 75